हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत और मुहर्रम का महीना

[हिन्दी – Hindi – هندي]

सैयद हुसैन उमरी मदनी

अनुवादः अज़ीज़ुर्रहमान उसमानी

संशोधनः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2013 - 1435

IslamHouse.com

شهادة الحسين رضي الله عنه وشهر محرم الحرام

« باللغة الهندية »

سيد حسين عمري مدني

ترجمة: عزيز الرحمن عثماني

مراجعة وتصحيح: عطاء الرحمن ضياء الله

2013 - 1435

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत और मुहर्रम का महीना

इस्लामी शिक्षा के अनुसार कुल महीनों की संख्या बारह है। जिन में से चार महीने हुर्मत और सम्मान वाले हैं।[1]

मुहर्रम का महीना हिज्रत और हुर्मत के अनुसार सब से पहला महीना है। इस में सामान्य रूप से रोज़ा रख़ने की फ़ज़ीलत आई है, तथा उसकी महानता और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उसे अल्लाह का महीना कहा गया है।[2] बल्कि विशिष्ट रूप से मुहर्रम की दस तारीख़ का रोज़ा रख़ने से पिछले एक साल के पापों का प्रायश्चित (कफ़्फारा) हो जाता है।[3]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जब मदीना में आगमन हुआ, तो यहूद को आशूरा का रोज़ा रखते देखा। कारण

---

[1] सूरतुत तौबा : 36

[2] सहीह मुस्लिम, अबु हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से।

[3] सहीह मुस्लिम अबु क़तादा रजियल्लाहु अन्हु की रिवायत से।

पूछा, तो ज्ञात हुआ कि यह एक महान और अच्छा दिन है। जिसमें अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम को नजात दिया। फ़िरऔन और उस की क़ौम को समुद्र में डिबो दिया। तो मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुऐ उस दिन का रोज़ा रखा। इसी लिए हम लोग उस दिन का रोज़ा रखते हैं। इस पर अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मूसा अलैहिस्सलाम पर तुम से ज़्यादा मेरा हक़ बनता है। अतः आप ने उस दिन रोज़ा रखा और लोगों को उस दिन रोज़ा रखने का आदेश दिया।[1]

इमाम इब्ने अब्दुल बर्र रहिमहुल्लाह ने इस बात पर सम्पूर्ण उम्मत का इजमाअ (सर्वसहमति) का उल्लेख किया है कि आशूरा के दिन का रोज़ा रखना मुसतहब़ (एच्छिक) है।[2] अगर कोई मनुष्य मात्र आशूरा (दस मुहर्रम) के दिन का रोज़ा रख़े तो पिछले एक साल के पाप क्षमा कर दिए जायेंगे।[3] इसलिए केवल

---

[1] सहीह बुखारी व सहीह मुसलिम, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाह अन्हु की रिवायत से।

[2] फ़त्हुलबारी, किताबुस्सौम, बाबो सियामे यौमे आशूरा।

[3] सहीह मुस्लिम अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से।

उसी दिन का भी रोज़ा रख़ना जायज़ है।[1] लेकिन अफ़जल (सर्वश्रेष्ठ) यह है कि नौ और दस मुहर्रम का रोज़ा रख़ा जाऐ।[2] क्योंकि इस र्काय में यहूद का विरोध होन के साथ साथ, अच्छे र्काय में पहल भी होगी। अन्यथा दस और ग्यारह मुहर्रम का रोज़ा रख़ लेना बेहतर होगा।[3]

पिछले विवरण से यह ज्ञात हुआ कि इस्लाम धर्म में मुहर्रम के महीने का महत्व मात्र रोज़ा रख़ने के कारण है, और विशेष रूप से आशूरा के दिन रोज़ा रख़ना सुन्नत है।

विशिष्ट रूप से आशूरा के दिन अपने परिवार पर ख़र्च करना, स्नान करना, सुर्मा लगाना और शरबत बाँटना आदि, यह सारे कार्य सुन्नत और उम्मत के सलफ़ (पूर्वजों) से साबित नहीं हैं। इसी प्रकार आशूरा के दिन नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती का जूदी पहॉड़ पर ठहरना, इबराहीम अलैहिस्सलाम की आग का ठंढा होना, यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम से अज़ाब का टलना, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुवें से निकालना, याकूब अलैहिस्सलाम

---

[1] फ़तावा स्थायी समिति 10/401.

[2] सहीह मुस्लिम, इब्ने अब्बास् रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रवायत से।

[3] सहीह इब्ने ख़ुजैमा, इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से।

की दृष्टि का लौट आना, अययूब अलैहिस्सलाम का अरोग्य होना, और मूसा अलैहिस्सलाम का जादूगरों पर विजय पाना इत्यादि। यह सारी बातें प्रमाणित एवं विश्वसनीय रिवायतों से सिद्ध नहीं हैं।

हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा का जन्म 5, शबान सन् 4 हिजरी में हुआ।[1](10) वह अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत प्रिय, [2](11) स्वर्ग के नौजवानों के सरदार,[3](12), रसूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बेहद निकट और समरूप,[4] और भलाई के कामों में अकेले एक उम्मत

---

[1] इमाम ज़हबी की सियर आलामिन्नुबला 2/280.

[2] सहीह बुख़ारी इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से।

[3] जामिउत्तिर्मिज़ी, अबु सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की सहीह सनद की रिवायत से।

[4] सहीह बुख़ारी, अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से।

थे।[1] उनसे महब्बत अल्लाह की महब्बत का हक़दार बना देती है।[2]

कूफ़ा वालों ने हुसैन रजियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त के लिए बैअत हेतु कई बार पत्र लिख़ा।[3] सहाबा में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा,[4] अबु सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु,[5] जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा,[6] अब्दुल्लाह बिन ज़ाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा[7] और अबु वाक़िद अल्लैसी रज़ियल्लाहु अन्हु[8] ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को कूफ़ा की ओर रूख न करने की सलाह दी, लेकिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने

---

[1] सुनन इब्ने माजा, याला बिन मुर्रा रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से हसन सनद के साथ।

[2] जामिउत्तिर्मिज़ी, उसामा बिन जैद रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत से हसन सनद के साथ।

[3] अहमद बिन यहया अल बलाज़री की अनसाबुल अशराफ 3/221.

[4] मुसन्नफ इब्ने अबी शैबह 15/96, हसन सनद के साथ।

[5] अबू हज्जाज अल म्ज्जी की तहजीबुल कमाल 6/461.

[6] अबू सअद की अत्तबक़ातुल कुबरा 1/445.

[7] इब्ने जरीर अत्तबरी की तारीख़ुल उमम वल मुलूक 6/311.

[8] इब्ने मनजूर की मुख़्तसर तारीख़े दमशक 7/139.

अपने इज्तिहाद पर भरोसा किया, और अहले कूफा के लगातार चिट्ठी आने के कारण आप ने कूफ़ा के लिए प्रस्थान किया। कूफ़ा, इराक का एक नगर है, और उस समय ईराक़ का भूपति उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद बिन मरजाना था।

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने इब्ने मरजाना की भेजी हुई सेना के सेनापति उमर बिन सअद बिन अबी वक़्कास के सामने तीन बातों का प्रस्ताव रख़ा : या तो उन को वापस जाने की आज्ञा दी जाए, या यज़ीद बिन मुआविया से भेंट करने के लिए शाम रवाना होने दें या फ़िर इस्लामी सीमाओं पर जिहाद के लिए जाने दें।[1] इब्ने मरजाना ने शाम की ओर प्रस्थान करने की आज्ञा दे दी। लेकिन हाशिया बरदारों (सभासदों) में शम्मर बिन ज़िलजौशन अज्जब्बी ने हस्तक्षेप करते हुऐ हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु को यज़ीद बिन मुआविया के पास भेजने से इनकार कर दिया, और स्वयं उसे निर्णय लेने पर उभारा।[2] परिणाम स्वरूप दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ और हुसैन रज़ियल्लाहु

---

[1] अबुल अरब मुहम्मद अत्तमीमी की अल–मिहन, पृ : 154

[2] तारीख़ुल उमम वल मुलूक 6/340–341.

अन्हु ने बड़ी वीरता व बहादुरी का प्रदर्शन किया। लेकिन शमर बिन ज़िलजौशन अज्जब्बी ने सिपाहियों को हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला करने और उन्हें क़त्ल करने का आदेश दिया। उस आदेश का पालन करते हुऐ ज़ुरआ बिन शरीक अत्तमीमी ने आघात हमला किया, और सनान बिन अनस अन्नख़ई ने सिर काट दिया।[1] हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की 65 वर्ष की आयु थी। ईराक़ के एक नगर कूफ़ा के निकट फ़ुरात नदी के समीप मैदाने करबला में सुबह के समय, दस मुहर्रम, 61 हिजरी, 12 अक्तूबर 680 ई. को आशूरा के दिन शहीद कर दिये गऐ, जिस मैदान में हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत से सम्बंधित आप सल्ल्लहु अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी की थी।[2] और उनके शरीर को उसी मैदान में दफ़न कर दिया गया।[3]

---

[1] मवाक़िफुल मुआरज़ा फी खिलाफत यज़ीद बिन मुआविया, लेखक : मुहम्मद रज़ान अश्शैबानी, पृ : 276.

[2] मुसनद अहमद, अनस की रिवायत से सहीह सनद के साथ।

[3] मजमूओ फतावा इब्ने तैमिय्या 4/508.

शहादत के बाद सिर को इब्ने मरजाना के पास लाया गया।[1] फ़िर उसे मदीना रवाना किया गया, और वहीं सिर की तदफ़ीन की गई।[2] हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के हत्यारे और उनकी हत्या से सहमत लोगों पर अल्लाह की शाप हो।[3]

जब इब्ने मरजाना ने ईराक़ के नगर कूफ़ा से शाम के नगर दमश्क़ में यज़ीद बिन मुआविया को इस घटना की सूचना का प्रत्र भेजा, तो यज़ीद बिन मुआविया रोते हुए कहने लगे कि हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के बगैर ही मैं ईराक़ वालों के आज्ञापालन से खुश हो जाता था। अल्लाह का शाप बरसे इब्ने मरजाना पर, अगर मैं वहाँ पर होता तो उपेक्षा से काम लेता। हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु पर अल्लाह की दया की वर्षा हो।[4]

इस के बाद यज़ीद बिन मुआविया ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या के अपराध में इब्ने मरजाना को मृत्यु की दण्ड सुनाई, और

---

[1] सहीह बुखारी, किताब फज़ाइलुस्सहाबा, बाब मनाक़िबुल हसन वल हुसैन 5/26 (हदीस संख्या : 3748), अनस की रिवायत से।

[2] मजमूओ फतावा इब्ने तैमिय्या 4/509.

[3] मजमूओ फतावा इब्ने तैमिय्या 4/504.

[4] अनसाबुल अशराफ 3/219–220, हसन सनद के साथ।

प्राण के बदले प्राण का धार्मिक दण्ड लागू किया गया।[1] इसके बाद अहले बैत के पुरूषों और महिलाओं को शाही आदर व सम्मान के साथ मदीना वापस रवाना कर दिया गया।[2] (32)

निश्चित रूप से हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत मुसलमान उम्मत के लिए एक दुख़द मुसीबत है, और मुसीबतों में धैर्य करने का निर्देश और सब्र करने वालों पर अल्लाह के पुरस्कारों और अनुकम्पाओं की शुभ सूचना भी है।[3] (33)

और जो लोग दुख़ और विपत्ति में नौहा (मातम) करते हुऐ अपने चेहरे को पीटे, कपड़ों को फ़ाड़े और गैर इस्लामी अज्ञानता काल के शब्दों का प्रयोग करे, तो इस प्रकार की चीज़ों का मुसलमानों से कोई संबन्ध नहीं है।[4](34)

क्योंकि नुबुव्वतत के शासनकाल में पत्नी के अतिरिक्त किसी और को अपने संबंधित की मृत्यु पर तीन दिन से ज्यादा शोक मनाने से रोका जाता था।[5](35)

---

[1] मजमूओ फतावा इब्ने तैमिय्या 4/507.

[2] तारीखुल उमम वल मुलूक 6/395.

[3] सूरतुल बक़रा : 156.

[4] सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम, इब्ने मसऊद की रिवायत से।

[5] सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम, उम्मे अतियया की रिवायत से।

तथा यह बात भी याद रहे कि इस्लाम धर्म के लिए मात्र एक ही सहाबी ने अपनी जान निछावर नहीं की, बल्कि अनगिनत अतिश्रेष्ठ और महान सहाबा ने इस्लाम की सर्वोप्परि के लिए शहीद किये गऐ। कुफ्र व नास्तिकता के मुक़ाबले में हमज़ा, जाफ़र, अली, उसमान और उमर रज़ियल्लाहु अन्हुम जैसे सहाबा की महान और एतिहासिक शहादतों से निगाह फे़रना और मात्र एक सहाबी ही की शहादत को महत्व देना कहीं क़ियामत के दिन अल्लाह तआला की न्यायालय में सहाबा के साथ पक्षपात और दोरुख़ा व्यवहार तो नहीं शुमार किया जाएगा।

ध्यान देने योग्य और बहुत ही ख़ेदजनक बात यह है कि जिस महीना को अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम ने अल्लाह का शुक्रिया अदा करते हुए रोज़े की हालत में बिताया, आज़ उसी महीने को उम्मते मुहम्मदिया सुन्नत के अनुसार रोज़ा रखकर गुज़ारने के बजाय, रास्ते रोक कर, छोटे बच्चों को पैसौं की लालच देते हुऐ, मुँह मीठा करने के लिए शर्बत बाँट रही है, और संपूण महीने को शोक और मातम में गुज़ार रही है। तथा जिस महीने में अल्लाह के पैगंबर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रफीक़े–आला अल्लाह से जा मिले, उस महीना में उम्मत ईद और उत्सव मना रही है। अल्लाह तआला हमें दीन की ठीक समझ और उस पर अमल करने की तौफीक़ (शक्ति) प्रदानक करे। आमीन।